खण्ड (क)

मनोविज्ञान (प्रतिष्ठा) स्नातक खण्ड-(2)

मनोवैज्ञानिक शोध (तृतीय-पत्र)

डॉ०- रमेन्द्र कुमार सिंह
(विभागाध्यक्ष
मनोविज्ञान- विभाग
डी० के० कालेज,
डुमरांव)

प्रश्न :→ मनोवैज्ञानिक शोध के प्रमुख चरणों की व्याख्या करें।
[Discuss the main steps of Psychological - research]

विज्ञान का विकास शोध कार्य पर आधारित होता है और शोध का प्रमुख लक्ष्य- "सत्य की खोज करना" होता है। शोध को परिभाषित करते हुए शोध वैज्ञानिक करलिंगर ने कहा है- "वैज्ञानिक शोध प्राकृतिक घटनाओं के बीच कल्पित सम्बन्धों की खोज के लिये निर्मित परिकल्पनाओं का क्रमबद्ध, नियंत्रित, अनुभवसिद्ध तथा तार्किक अन्वेषण होता है।" इस तरह स्पष्ट हो जाता है शोध का उद्देश्य अव्यवस्थित निरीक्षण मात्र नहीं है बल्कि वैज्ञानिक तरीका से सत्य की खोज करना है। इस तरह अन्वेषण में कई चरणों से क्रमिक रुप में गुजरना पड़ता है। इसे ही शोध के चरण कहा जाता है। मनोवैज्ञानिकों द्वारा बताये गये शोध के विभिन्न चरण क्रमिक रुप से निम्नवत् है :-

(1.) शोध लक्ष्य का निर्धारण :- व्यवहारपरक विज्ञानों में शोध किसी ज्ञान के संचित भंडार में नये तथ्यों को जोड़ने का प्रयास है। अतः शोध प्रकृति से सीधे पूछा गया प्रश्न की भाँति है। इसके लिये शोध लक्ष्य निर्धारित करके शोध कार्य के लिये बढ़ते हैं।

(2.) विषय का चुनाव :- अब शोधकर्ता अपने उद्देश्य के अनुसार विषय का चुनाव करता है। यहाँ अध्ययनकर्ता को विषय से से संबन्धित कोई स्पष्ट ज्ञान नहीं होता है

(3.) साहित्य सर्वेक्षण :→ इस चरण में शोधकर्ता शोध-विषय से सम्बन्धित पहले से किये गये अनुसंधानों के साहित्यिक स्रोतों को इकट्ठा करके सर्वेक्षण करता है, ताकि यह जानकारी एकत्रित कर सके की पहले के शोधों में क्या कमियाँ रह गई थी? यदि ऐसा है तो कैसे दूर किया जा सकता है।

(4.) शोध-समस्या :- प्रत्येक विज्ञान में शोध का वास्तविक प्रारम्भ शोध समस्या से होता है। मनोविज्ञान में

में भी शोधलक्ष्य को ध्यान में रखकर शोधसमस्या का बनाया जाता है। शोध समस्या का निर्माण एक प्रश्न के रूप में किया जाता है। अर्थात समस्या एक प्रश्नवाचक कथन के रूप में होता है। जैसे- "क्या प्रलोभन शिक्षण को प्रभावित करता है? इस प्रश्न का हल कर पाने के लिए शोध कार्य किया जायेगा। करलिंगर भी समस्या को प्रश्नवाचक कथन मानते हैं जो दो या दो से अधिक परिवर्त्यों के पारस्परिक सम्बन्धों के बारे में पूछा जाता है। यह शोध का बड़ा ही महत्वपूर्ण चरण है। शोध की सफलता के लिये परिवर्त्यों का सही-सही निर्धारण एवं परिमापन का ज्ञान होना आवश्यक है।

परिकल्पनाओं का निर्माण :- शोध का अगला चरण परिकल्पनाओं का निर्माण करना होता है। यह अत्यंत ही महत्वपूर्ण चरण होता है। पूर्वकल्पना या परिकल्पना शोध का आधारशिला होता है। वास्तव में शोध का वास्तविक प्रारंभ परिकल्पना-निर्माण से होता है और उसका अंत भी परिकल्पना की पुष्टि या अपुष्टि से होता है। प्रत्येक शोध नई परिकल्पनाओं एवं समस्याओं का जन्म देता है। गुड एवं हैट्स के अनुसार "परिकल्पना यह बताती है कि हमें क्या खोज करनी है, जो भविष्य की तरफ देखती है। यह सत्य अथवा असत्य भी हो सकती है।"

शोधयोजना :- शोध की सफलता शोधयोजना पर आधारित होती है। शोधयोजना में शोध की प्रत्येक विस्तार का रूपरेखा दिया रहता है। इसमें पूरे शोध को कार्यान्वित करने की विधियाँ, प्रदत्त संग्रह (Data Collection), विश्लेषण तथा प्रदत्त निरूपण (Interpretation) आदि सबकुछ निर्धारित कर दिया जाता है। शोध-योजना का घनिष्ठ सम्बन्ध शोधनीति (Research-strategy) से ही होता है।

शोधनीति (Research-strategy) :- यह शोध का एक प्रमुख चरण है। इसमें शोध से सम्बन्धित महत्वपूर्ण पहलुओं की युक्ति बताई जाती है। जो परिकल्पनाओं की परीक्षण के लिए तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण में काम आता है। शोध नीति जितनी ही स्पष्ट एवं वैज्ञानिक होगी शोध परिणाम उतना ही वैध एवं विश्वसनीय होगा।

शोध अभिकल्प (Research-design) :-

शोध के चरणों में एक महत्वपूर्ण अंश शोध-अभिकल्प है, जो शोध के लक्ष्य तक पहुँचने में साधन प्रस्तुत करता है। करलिंगर इसे एक कल्पित प्रणाली मानते हैं जो शोध संबन्धित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रसरणों (variance) को नियंत्रण करता होता है। शोध अभिकल्प की दो खण्ड होते हैं :-

(I) आकार (Figure)
(II) अन्तर्वस्तु (Content)

शोध के लिये पर्याप्त नियंत्रण आदि का उल्लेख होता है।

आँकड़ों का संग्रह :- आँकड़ों का संकलन शोध प्रक्रम की एक प्रमुख सोपान है। इसके तहत अपने परिकल्पनाओं के लिहाज से उपकरणों का चयन किया जाता है जो शोध निष्कर्ष तक पहुँचने में मदद कर सकते हैं। तथ्य संग्रह के लिए उपयोग में लाये जानेवाले प्रतिबिम्बों जैसे- साक्षात्कार, प्रश्नावली, रेटिंग परिमाप आदि का चयन कर उल्लेख कर दिया जाता है। समस्या के स्वरूप को ध्यान में रखकर उपकरण चयन करना है जो परिकल्पनाओं की जाँच में कारगर होते हैं।

इन उपकरणों के माध्यम से शोधकर्ता पक्षपात रहित होकर आँकड़ों का संकलन करता है।

प्रतिदर्श (Sampling) :- प्रतिदर्श का निर्धारण शोध का एक आवश्यक कार्य है। सम्पूर्ण जनसंख्या पर ~~शोध~~ तथ्यसंग्रह संभव नहीं होता है। अतः सम्पूर्ण जनसंख्या की एक छोटा अंश जो सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व कर सके का चयन किया जाता है। गुड एवं हैट के अनुसार -

"एक प्रतिदर्श जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है किसी व्यापक समष्टि का लघु प्रतिनिधि अंश होता है।"

आकड़ों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं निरूपण :-

यह शोध कार्य का बहुत ही महत्वपूर्ण चरण है। प्रायः प्राप्त आँकड़ों या कच्चे तथ्यों का स्वरूप अव्यवस्थित होता है। इस चरण में इन्हें व्यवस्थित करना पड़ता है। इस तरह प्राप्त आँकड़ो का वर्गीकरण तथा विश्लेषण करके उनको व्यवस्थित किया जाता है। आकड़ों का कूटीकरण (सांकेतिकरण) यानि Coding करने के बाद तथ्य निरूपण (Interpretation

किया जाता है। अतः इस प्रक्रिया में उपयुक्त सांख्यकीय पद्धतियों को अपनाया जाता है और इन्हीं सांख्यकीय पद्धतियों के आधार पर परिकल्पनाओं को स्वीकृत अथवा अस्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष (Conclusion) :- यह शोध-कार्य का अंतिम चरण होता है। प्राप्त निष्कर्ष का सामान्यीकरण किया जाता है। यही प्राप्त निष्कर्ष शोध-समस्या का समाधान होता है। निष्कर्ष में पूरे शोध-कार्य के विविध चरणों का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाता है जो शोध निष्कर्षों के प्रसारण एवं सत्यापन (verification) में सहायक होते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अनुसंधान कार्य कई चरणों से होकर गुजरता है। ये सभी स्तर या चरण एक दूसरे से आपस में सम्बन्धित होते हैं। एक के अभाव में भी शोध कार्य अधूरा रह सकता है। शोध कार्य में पग-पग पर विशेष सावधानियाँ बरतने की आवश्यकता होती है। शोधकर्ता को अपने व्यक्तिगत प्रभावों से बचने का प्रयास करना चाहिए। शोध निष्कर्ष या तो परिकल्पनाओं की सत्यता की पुष्टि करता है अथवा खंडित करता है।

E-Content for U.G. (B.A. Part-(2))
Subject - Psychology (Hons)
Topic - Steps of Psychological-research
Paper's name - Research-Psychology
Paper - III
Faculty name :- Dr. Ramendra Kr. Singh
H.O.D. - Psychology
D.K. College, Dumraon
Email - ramendrasinghdkc@gmail.com
Mob - 9798677240